

शीर्ष व्यापारिक साझेदारों के साथ भारत का व्यापार घाटा

प्रलम्ब के लिये:

[व्यापार घाटा](#), [मुक्त व्यापार समझौता](#), [नरियातोनमुख कषेत्र](#), [बाह्य ऋण](#), [मुद्रासफीति](#), [मरचेंडाइज एकस्पोर्ट्स फरॉम इंडिया स्कीम \(MEIS\)](#), [सागरमाला परयोजना](#), [प्रत्यक्ष वदिशी नविश \(FDI\)](#)

मेन्स के लिये:

भारत के व्यापार घाटे की वर्तमान स्थिति, भारतीय अर्थव्यवस्था पर व्यापार घाटे के प्रमुख प्रभाव, व्यापार घाटे को नरितरति करने के संभावति उपाय ।

[स्रोत: द हद्रि](#)

चर्चा में क्यों?

हालिया आधिकारिक आँकड़ों द्वारा पता चलता है कि वर्ष 2023-24 में भारत को अपने शीर्ष 10 व्यापारिक साझेदारों में से 9 के साथ [व्यापार घाटा](#) होगा, जिनमें चीन, रूस, सगिापुर और दक्षिण कोरिया शामिल हैं ।

- व्यापार घाटा तब होता है जब किसी देश के आयात का मूल्य उसके नरियात के मूल्य से अधिक हो जाता है, आयात और नरियात से तात्पर्य भौतिक वस्तुओं और सेवाओं दोनों से है ।

भारत के व्यापार घाटे की वर्तमान स्थिति क्या है?

- पछिले वतित वर्ष में भारत का कुल व्यापार घाटा घटकर 238.3 बलियिन अमेरिकी डॉलर रह गया, जबकि वतित वर्ष 2021-22 में यह 264.9 बलियिन अमेरिकी डॉलर था ।
 - चीन, रूस, दक्षिण कोरिया और हॉन्गकॉन्ग के साथ व्यापार घाटा 2022-23 की तुलना में पछिले वतित वर्ष में बढ़ गया, जबकि संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, रूस, इंडोनेशिया और इराक के साथ व्यापार घाटा कम हो गया ।
- चीन वर्ष 2023-24 में 118.4 बलियिन डॉलर के दोतरफा वाणज्य के साथ अमेरिका को पीछे छोड़ते हुए भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बनकर उभरा है ।
 - हालाँकि, वर्ष 2021-22 और 2022-23 के दौरान अमेरिका भारत का शीर्ष व्यापारिक साझेदार था ।
- वर्ष 2023-24 में भारत का अमेरिका के साथ 36.74 बलियिन डॉलर का व्यापार अधशेष होगा तथा ब्रिटिन, बेलजियम, इटली, फ्राँस और बांग्लादेश के साथ भी यह अधशेष रहेगा ।
- भारत का अपने चार शीर्ष व्यापारिक साझेदारों - सगिापुर, संयुक्त अरब अमीरात, कोरिया और इंडोनेशिया (एशियाई ब्लॉक (Asian Bloc) के भाग के रूप में) के साथ [मुक्त व्यापार समझौता](#) है ।

भारत के व्यापार घाटे के पीछे क्या कारण हैं?

- ऊर्जा आयात पर नरिभरता:
 - भारत अपनी कच्चे तेल की 85% से अधिक जरूरत को आयात करता है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक तेल कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रतिसुभेद्य हो जाती है, जिससे व्यापार घाटे पर काफी प्रभाव पड़ता है ।
- प्रमुख इनपुट पर नरिभरता:
 - कुछ भारतीय उद्योग, जैसे [फार्मास्यूटिकल्स \(Pharmaceuticals\)](#), [सेमीकंडक्टर \(Semiconductors\)](#) आदि आयातित कच्चे माल और मध्यवर्ती वस्तुओं पर बहुत अधिक नरिभर हैं । इससे आयात मूल्य बढ़ता है और घाटा बढ़ता है ।
 - उदाहरण के लिये, फार्मास्यूटिकल क्षेत्र चीन से सक्रिय फार्मास्यूटिकल सामग्री (Active Pharmaceutical Ingredients- APIs) का भारी मात्रा में आयात करता है ।
- वनरिमति वस्तुओं के नरियात में कमी:

- चीन व अमेरिका जैसे देशों की तुलना में अल्प वनिर्माण क्षमता और वैश्विक बाज़ार में अल्प प्रतस्पर्द्धात्मकता जैसे कारकों के कारण भारत से नरियातति नरिमति वस्तुओं की मात्रा अक्सर आयातति वस्तुओं की मात्रा से अपेक्षाकृत कम रह जाती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर व्यापार घाटे के प्रमुख प्रभाव क्या हैं?

■ लाभ:

- यदि कोई राष्ट्र मध्यवर्ती वस्तुओं या कच्चे माल का आयात कर रहा है, तो ऐसा व्यापार असंतुलन स्वाभाविक रूप से हानिकारक नहीं है, क्योंकि इससे नरियात और वनिर्माण में वृद्धि होगी।
- व्यापार घाटे का एक अल्पकालिक लाभ यह है कि आयात वृद्धि से नागरिकों को वविधि प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित होती है, जिससे उन्हें अधिक विकल्प प्राप्त होते हैं तथा उनके जीवन स्तर में भी सुधार होता है।
- व्यापार घाटे के कारण मुद्रा का अवमूल्यन भी होता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक प्रतस्पर्द्धा कीमतों के कारण भारतीय नरियात को प्राथमिकता मिलती है।
- कुछ मामलों में, व्यापार घाटा घरेलू व्यवसायों को नवाचार में नविश करने और आयातति वस्तुओं के साथ प्रतस्पर्द्धा करने हेतु दक्षता में सुधार करने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। इससे पैकेजिंग, शपिंग, लॉजिस्टिक्स आदि जैसे नरियात-उन्मुख क्षेत्रों में रोज़गार सृजन हो सकता है।

■ चुनौतियाँ:

- आयात पर अत्यधिक नरिभरता कुछ क्षेत्रों में घरेलू नवाचार और उत्पादन को बाधति कर सकती है, जिससे घरेलू स्तर पर उत्पादति वस्तुओं की उपलब्धता सीमित हो सकती है।
- उच्च व्यापार घाटा, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ आयात की मात्रा उच्च है, उस विशेष क्षेत्र से संबंधति उद्योगों में रोज़गार के कम होने का कारण बन सकता है।
 - उदाहरण के लिये, बांग्लादेश से सस्ती दरों पर वस्त्र उत्पादों के आयात के कारण कुछ उद्योग बंद हो गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप देश में नौकरियाँ समाप्त हो गई हैं।
- नरितर व्यापार घाटा रुपए के मूल्य पर दबाव डाल सकता है, जिससे घरेलू मुद्रा कमज़ोर हो सकती है। इससे आयात और भी महँगा हो सकता है।
- नरियात में कमी होने से नरियात शुल्क से सरकार को मिलने वाला राजस्व कम हो सकता है। इससे सरकार की सामाजिक कार्यक्रमों और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये धन जुटाने की क्षमता प्रभावति हो सकती है।
- व्यापार घाटे को वलितपोषति करने के लिये भारत को वदिशी स्रोतों से ऋण लेने की आवश्यकता हो सकती है, जिससे माह्य ऋण और ब्याज भुगतान में वृद्धि होगी।
 - इससे वदिशी मुद्रा भंडार और भी कम हो जाता है तथा नविशकों को आर्थिक अस्थिरता का संकेत मिलता है, जिससे वदिशी नविश में कमी आती है।

व्यापार घाटे को नरिंतरति करने के लिये क्या उपाय किये जा सकते हैं?

- व्यापार समझौते: प्रमुख साझेदारों के साथ FTA पर बातचीत और करयान्वयन से भारतीय नरियात पर टैरफि एवं अन्य बाधाएँ कम हो सकती हैं, जिससे वे वदिशी बाज़ारों में प्रतस्पर्द्धा कर सकेंगे।
 - उदाहरण: भारत-यूई CEPA का उद्देश्य द्वपिक्षीय व्यापार में होने वाले 80% से अधिक टैरफि को कम करना है, जिससे भारतीय वस्तुओं, फार्मास्यूटिकल्स और कृषि उत्पादों के नरियात को बढ़ावा मिलेगा।
- नरियात अवसंरचना में सुधार: बंदरगाहों, सड़कों और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क के आधुनिकीकरण जैसे बुनियादी ढाँचे के विकास में नविश से नरियात प्रक्रिया को सुव्यवस्थति किया जा सकता है और परविहन लागत को कम किया जा सकता है।
- आयात प्रतस्तिथान: सरकार सार्वजनिक खरीद नीतियों और स्थानीय स्तर पर नरिमति वस्तुओं को बढ़ावा देने वाले अभियानों के माध्यम से आयातति उत्पादों के लिये घरेलू विकल्पों के उपयोग को प्रोत्साहित करेगी।
 - उदाहरण: सरकारी बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में घरेलू स्तर पर उत्पादति इस्पात के उपयोग को बढ़ावा देने से आयातति इस्पात पर नरिभरता कम हो सकती है और घरेलू इस्पात उद्योग को बढ़ावा मिल सकता है।
- आयात को तर्कसंगत बनाना: आयात डेटा का वशिलेषण करने से गैर-आवश्यक या वलिसति की वस्तुओं की पहचान की जा सकती है, जनिहें घरेलू स्तर पर उत्पादति विकल्पों के साथ प्रतस्तिथानति किया जा सकता है।
 - उदाहरण: सरकार को उच्च टैरफि के माध्यम से कुछ इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के आयात को हतोत्साहित करना चाहति तथा उपभोक्ताओं को घरेलू स्तर पर उत्पादति विकल्प चुनने के लिये प्रोत्साहित करना चाहति।
- कार्यबल को कुशल बनाना: कौशल विकास कार्यक्रमों में नविश करके आधुनिक उद्योगों के लिये आवश्यक वशिषज्जता से युक्त कार्यबल तैयार किया जा सकता है, जिससे घरेलू उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी और आयात पर नरिभरता कम होगी।
- मुद्रा और ऋण स्तर का प्रभावी प्रबंधन: RBI को रुपये की वनिमिय दर का प्रभावी प्रबंधन करना चाहति तथा ऐसा संतुलन स्थापति करना चाहति जो अत्यधिक मूल्यह्रास कयि बनिा नरियात को बढ़ावा दे।
 - सरकार को अपने ऋण भार को नमिन करने के लिये राजकोषीय समेकन पर ध्यान केंद्रति करना चाहति, ताकि घरेलू उद्योगों के विकास हेतु अधिक स्थिर आर्थिक वातावरण का नरिमाण हो सके।

नषिकर्ष

यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि सभी के लिये एक जैसा समाधान नहीं है, और इन उपायों की प्रभावशीलता वशिषट व्यापार साझेदार, आयात और नरियात की प्रकृति तथा वैश्विक आर्थिक माहौल जैसे वभिन्न कारकों पर नरिभर करती है। भारत सरकार को स्थिति का सावधानीपूर्वक आकलन करने और व्यापार घाटे

को प्रभावी ढंग से संबोधित करने तथा सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए इन रणनीतियों के संयोजन को लागू करने की आवश्यकता है।

दृष्टि भिन्न प्रश्न:

प्रश्न. भारत के अधिकांश प्रमुख व्यापारिक साझेदारों के साथ वर्तमान व्यापार घाटे की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए, भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों पर चर्चा कीजिये। साथ ही भारत के व्यापार घाटे को कम करने के उपाय भी सुझाएँ।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

????????? :

प्रश्न. नमिनलखिति देशों पर वचिर कीजिये:(2018)

1. ऑस्ट्रेलिया
2. कनाडा
3. चीन
4. भारत
5. जापान
6. यू.एस.ए.

उपर्युक्त में से कौन-से देश आसियान (ASEAN) के 'मुक्त-व्यापार साझेदार' हैं?

- (a) 1, 2, 4 और 5
- (b) 3, 4, 5 और 6
- (c) 1, 3, 4 और 5
- (d) 2, 3, 4 और 6

उत्तर: (c)

प्रश्न. नमिनलखिति में से कौन सा 'आयात कवर' शब्द का सबसे अच्छा वर्णन करता है, जो कभी-कभी समाचारों में देखा जाता है? (वर्ष 2016)

- (A) यह किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद के आयात के मूल्य का अनुपात है।
- (B) यह एक वर्ष में देश के आयात का कुल मूल्य है।
- (C) यह निर्यात के मूल्य और दो देशों के बीच आयात के बीच का अनुपात है।
- (D) यह उतने महीनों की संख्या है जितने महीने तक आयात का भुगतान किसी देश के अंतरराष्ट्रीय भंडार द्वारा किया जा सकता है।

उत्तर: D

??????:

प्रश्न. सामान्यतः देश कृषि से उद्योग और बाद में सेवाओं को अन्तरति होते हैं पर भारत सीधे ही कृषि से सेवाओं को अन्तरति हो गया है। देश में उद्योग के मुकाबले सेवाओं की वशाल संवृद्धि के क्या कारण हैं? क्या भारत सशक्त औद्योगिक आधार के बिना एक विकसित देश बन सकता है? (2014)